ठंडी नहीं होती कभी आग

Scanned with OKEN Scanner

© लेखकाधीन

प्रकाशक : **शब्दसृष्टि**
1/10295, गली नं. 1, वैस्ट गोरखपार्क,
शाहदरा, दिल्ली-110032
प्रथम संस्करण : 2001
मूल्य : रु. 110.00
शब्दांकन : उमेश लेज़र प्रिंट्स, शाहदरा, दिल्ली-110 032
मुद्रक : रुचिका प्रिंटर्स, शाहदरा, दिल्ली.110 032

THANDI NAHIN HOTI KABHI AAG (Poems)
by Rajender Chyavan

Scanned with OKEN Scanner

कविता-क्रम

रक्त के धब्बे	15
आत्महत्या के बाद	16
सामर्थ्य	18
मेरे चारों ओर	19
अस्तित्व की खोज में	20
अस्तित्व जागता है	21
उस दिन	22
आखिर यह कैसा मौसम है?	23
ओ! मेरी श्वासों के सम्मोहक	24
यह मन का उद्वेलन...	25
वे उषा के फूल	26
बनाएं नई नाव	27
वे खण्डहर हैं	28
यह अस्पृश्य धरातल	29
वैशाख की तपती दोपहर में	30
मेरे चारों ओर बहुत से पोस्टर—	31
उस रोज	32
नदी के तीर-1	33
नदी के तीर-2	34
हां हम हैं, कुछ हैं	35
मेरे चारों ओर अथाह जलराशि है	36
दूर आकाश में पंछी उड़े	38
धूम्र के बादल	39
लबादे	40
मैं....नहीं हूंगा	41
शेष रह जाओ—केवल तुम	42

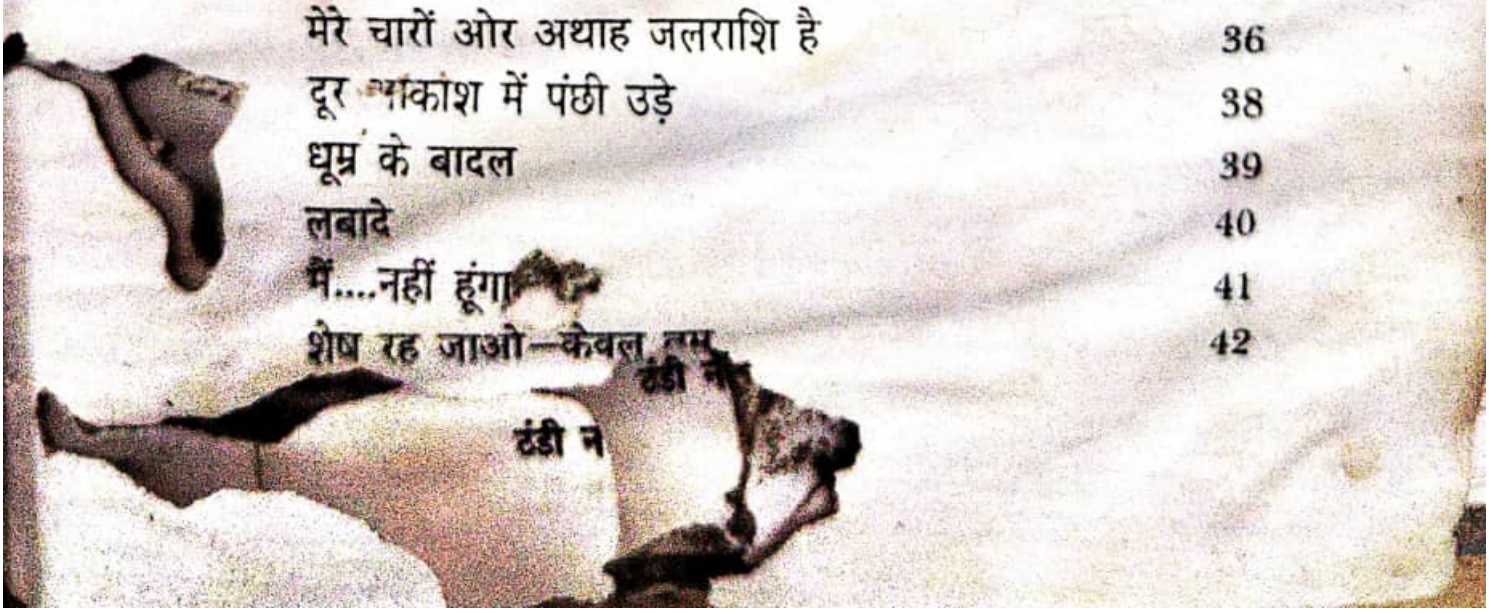

Scanned with OKEN Scanner

गोताखोर कामनाएं	43
अन्धकार का यह जाल	44
कवि	46
आओ मेरे मित्र!	48
मैं अनार पर लगा अनार हूं	52
बेटी के लिए	53
उस अकेले पन्थ पर	56
एक मीठी आस का पंछी	57
शब्दों की तलाश में	58
खत—एक कुमारी मां का	59
युद्धज	62
अब स्तुतियां नहीं पढ़ूंगी	64
एक नर्स के प्रति	66
तुम	68
जीवन और मृत्यु	69
विस्तृत मस्तिष्क की क्रीड़ाभूमि में	70
घूम रहे हैं कंजड़	71
कविता	73
मुक्ति के लिए	74
रूप की सीमा	76
गांधीजी के सिर पर कौआ बैठा	78
बीज	79
मां के नाम	80
अपने युग में	83
विश्व मटकी में	84
पगली	85
किसान का बेटा	86
गरुड़ शिशु का अवसान	88
तुलसी के प्रति	90
धूमिल की मौत पर	92

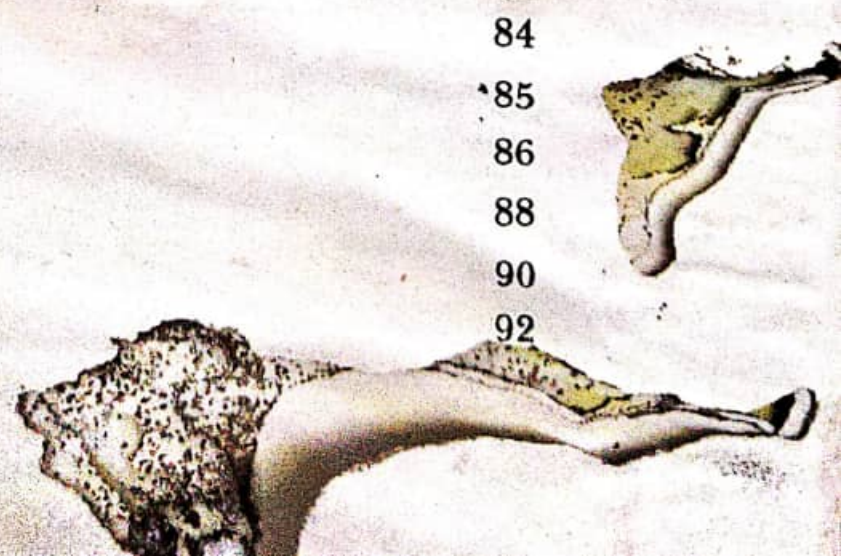

बेंजामिन मोलाइस की मौत पर	94
काला जादू	96
यूनानी तरुण कवि एलेकज़ेंद्रोज पानागालिस को मृत्युदण्ड देने पर	98
अगर कोई खुद ही मसीहा बनने का ढोंग रचे	100
हमारे तुम्हारे और सूरज के बीच	102
जख्मी कन्धे और इतिहास पुत्र	104
मुबारक हो नया साल	108
अग्निनदी में	110

Scanned with OKEN Scanner

Scanned with OKEN Scanner